

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

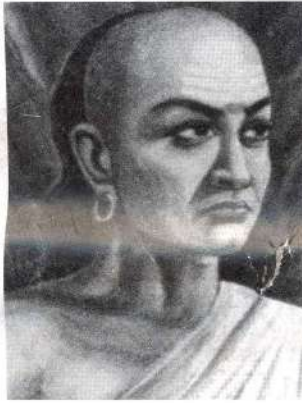
(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern ThinkingMonthly
MagazineIssue
87Year
10Volume
1Nov. 2019
ChandigarhPage
24मासिक पत्रिका
Subscription Cost
Annual - Rs. 150

विचार

ज्ञान क्यों धन से श्रेष्ठ है



चाणक्य उच्च कोटि के विद्वान, अध्यापक व दार्शनिक थे। अपनी बुद्धिमत्ता द्वारा उन्होंने चन्द्रगुप्त को बहुत कम उमर में ही मोर्या सम्राज्य का सम्राट बनाया यही नहीं मोर्या सम्राज्य का विस्तार दूर दूर तक किया। यह इस चीज का एक जीवित उदाहरण है कि ज्ञान क्यों धन से श्रेष्ठ है

घनवान का सम्मान केवल अपने गांव या शहर तक सीमित है। राजा का सम्मान केवल अपने गांव या शहर तक सीमित है। विद्वान का सम्मान हर स्थान पर हर समय होता है

The fool is worshipped only in the house.

The rich man is respected in his own village,

The king is honoured only in his own kingdom,

But the wise man is worshipped, respected and

Honoured in all places, at all times, under all conditions

बात पुराने समय की है। दो भाई अपने अपने जीवन का रास्ता खोजने के लिये घर से निकल गये। एक भाई शिक्षा प्राप्ति के लिये गुरुकुल में दाखिल हो गया और दूसरा भाई एक हीरे जवाहारात के व्यापारी के पास में लग गया। कुछ समय बाद दोनों ने अपने घर जाने की सोची और जो कमाया था अपने साथ ले कर घर के लिये चल पड़े।

रास्ते में उन पर डाकूओं ने हमला कर दिया। जो भाई हीरे जवाहारात के व्यापारी के पास काम करता था उसके पास कमाया हुआ काफी धन था। डाकूओं ने सब छीन लिया। दूसरे भाई ने तो गुरुकुल में रह कर केवल ज्ञान प्राप्त किया था जिसे

Contact:**BHARTENDU SOOD****Editor, Publisher & Printer****# 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047****Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,****E-mail : bhartsood@yahoo.co.in**

उत्तम सन्देश
दिल्ली ज्ञान प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड
नई दिल्ली-110001

डाकू ले नहीं सकते थे। एक भाई खाली हाथ, सभी कमाया हुआ धन खो कर, हताश और दुखी घर पहुंचा और दूसरे के पास सब कमाई दौलत वैसे ही सुरक्षित थी।

हम सभी को जीवन यापन करने के लिये धन की आवश्यकता होती है। धन के बिना सब काम रुक जाते हैं। चाणक्य के अनुसार धन की विपदा व्यक्ति को धीनोने से धीनोना पाप करने पर मजबूर कर देती है, धन का न होना भी अभिषाप है। धन व्यक्ति को न केवल सुरक्षा प्रदान करता है बल्कि ठीक ढंग से कमाया हुआ धन समाज में समान प्रदान करता है। वेद में कहा है—अग्निना रयिमश्नवत पोषमेव दिवे दिवे। यशसं वीरवत्वमम। ऐ मानव ! तू खूब धन कमा, परन्तु तेरा धन आत्मा और शरीर की पुष्टी करने वाला, उत्तम कीर्ति को बढ़ाने वाला व ऐसा धन हो, जिसे विद्वान व शूरवीर भी चाहते हैं।

आगे वेद कहता है—हमें धर्मानुसार प्राप्त किये धन से जीवन निर्वाह करना चाहिये। अर्थात् जीवन में धन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता।

परन्तु धन को कमाने के लिये ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञान प्राप्ति का साधन है शिक्षा, जो कि हमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के योग्य बनाये व हमारे चरित्र का निर्माण भी करे। जो व्यक्ति यह सोचते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल मात्र जीवन यापन करने के लिये धन कमाना है वह शिक्षा के स्तर को बहुत नीचा ला रहे हैं। ज्ञान धन कमाने की चाबी नहीं बल्कि उस से कहीं उंचा है। हम ज्ञान से धन तो कमा सकते हैं पर धन द्वारा ज्ञान नहीं खरीद सकते। ज्ञान तो स्वाध्याय के तप द्वारा ही आता है। जब की संसार की सारी सम्पदा की तो कोई सीमा है पर ज्ञान की कोई नहीं। धन का खजाना धन के मालिक को धन की सुरक्षा के लिये चिंतित कर सकता है पर जिस के पास ज्ञान का खजाना है उसे उसकी सुरक्षा की कोई चिंता नहीं होती। धन को न कोड़ चुरा सकता है न ही कोई लुटेरा लूट सकता है। धन के बारे में एक खास बात यह है कि धन को जब हम बांटते हैं या खर्च करते हैं तो यह कम होता है जब की ज्ञान बांटने से और बढ़ता है। ज्ञान का दान देना, धन देने से कहीं अच्छा है। कहते हैं कि भूखे व्यक्ति को रोटी तो दें पर उस से भी ज़रूरी है कि उसे इस योग्य बनायें कि वह अपनी रोटी खुद कमा सके। बाबा आमटे जिन्होंने अपना सारा जीवन कोढ़ पीड़ितों को नया जीवन देने में लगा दिया था, न केवल कोढ़ पीड़ितों का ईलाज करते थे पर जब वे स्वस्थ हो जाते तो उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करने के लिये उनकी योग्यता के अनुसार कोई हुनर सिखाते थे ताकि उन्हें अपना जीवन यापन करने के लिये भीख न मांगनी पड़े।

मुंडका उपनिषद में कहा है कि ज्ञान दो तरह का है। एक ज्ञान वह है जिस में हमने वेद उपनिषद पढ़ लिये और उन में कही बातों को दीमाग में संग्रह कर लिया। यह ज्ञान इतना उंचा नहीं। दूसरा ज्ञान वह है जिस द्वारा हम सृष्टि के रचइता ईश्वर को समझते हैं और उस तक पहुंचते हैं। यह ज्ञान उच्चतम श्रेणी का है। उपनिषद कहता है,—— उस ईश्वर को जानो उस को जानने के बाद बाकी सब का ज्ञान आप को स्वभाविक रूप से हो जायेगा। यह संसारिक ज्ञान मृत्यु के साथ समाप्त हो जायेगा जब की दुसरा ज्ञान आपको ईश्वर तक ले जायेगा। श्री कृष्ण गीता में कहते हैं——ईश्वर की उपासना द्वारा प्राप्त ज्ञान का प्रकाश मृत्यु के बाद भी नष्ट नहीं होता।

शास्त्रों में कहा है——

हिरण्यमयेनप पात्रेण सत्यस्यापितमं मुख्यम

तत्त्व पूषन्नपावृणु सत्यथमार्य दृष्टये

उस परम सत्य ब्रह्म के दर्शन तभी होंगे जब कि व्यक्ति की आंखों के आगे से धन दौलत का संसारिक सुवर्णमय आवरण हट जायेगा। हम माया के इस आवरण को हटा नहीं पाते इसलिये परम सत्य ब्रह्म के दर्शन नहीं कर पाते हैं जो कि मानव जीवन का लक्ष्य है।

जो ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त करने का इच्छुक हो उसे धन व संसार की चीजों को एक साधन तक ही सीमित रखना होगा और इनके संग्रह से बचना होगा यही है ज्ञान व धन का उचित सम्बन्ध।

PROPERTY FOR SALE

1st Floor of a 1 Kanal Corner House in Sector-35 Chandigarh, facing Park, 2BHK with Annnnexe, newly renovated, ready to move.

Contact—9878595377 email-madan.mohindra@outlook.com

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप बैंक या कैश निम्न बैंक में जमा करवा सकते हैं :-
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीऑर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का बैंक भेज दें।

पत्रिका में दिये गये विचारों के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार हैं। लेखकों के टेलीफोन न. दिए गए हैं
न्यायिक मामलों के लिए चण्डीगढ़ के न्यायालय मान्य हैं।

Publisher & Printer Bhartendu Sood Printed at Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood Place of Publication # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

आर्य समाज के नियम ही आर्य समाज की पहचान करवाते है।

प्रियम्बिका सूद



आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का 196 जन्म दिवस 18 फरवरी को है।

आर्य समाज को जानने व समझने के लिये आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा बनाये गये दस नियम ही काफी हैं

आर्य समाज के संगठन को महर्षि ने विशुद्ध नैतिक और आध्यात्मिक आधार पर प्रतिष्ठान किया। किसी भी नियम में किसी भी संकुचित विचारधारा का कोई स्थान नहीं। किसी भी धर्म या मत को स्वीकार करने का आग्रह नहीं। इन नियमों के छे सतम्भ हैं।

1. वसुधैव कुटुम्बकम्— सारा विश्व एक परिवार है व इस परिवार में सभी प्राणी आते हैं मनुष्य से पशु पक्षी तक। आर्य सज्जन वही है जो की जाति, रंग व सम्प्रदाय के भेद भाव से उपर उठकर सारे विश्व व सारे प्राणीजगत की बात सोचता है। आर्य समाज का छठा नियम कहता है—संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। इसी तरह नवें नियम में कहा गया है—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिये। आज जब हम इनक्लुसिव उन्नति की बात कर रहे हैं तो यह आर्य समाज का नियम उस के लिये एक मन्त्र हैं
2. अविद्याका नाश व विद्या का प्रसार। आर्य समाजी वही है जो की ज्ञान को प्राप्त करके अज्ञान के अन्धेरे को दूर करे व ज्ञान का प्रसार करके प्राणीयों के दुखों को दूर करे। ज्ञान को उन तक पहुंचाना जो ज्ञान के बिना भटक रहे हैं, सब से बड़ा उपकार है।
3. चार वेदों को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक कहा गया है। यह सत्य है कि यह विद्याएँ बीजों के रूप में हैं व इन विद्याओं को पौधे व वृक्ष का रूप देकर फल खाने के लिये मनुष्य को वेदों को पढ़ना व समझना होगा। आर्य समाज के इस नियम से प्रेरणा ले कर ही आर्य समाज के तपस्वियों ने जिनमें स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा हंसराज का नाम मुख्य है, शिक्षा के क्षेत्र में ऐसा काम किया जिसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। अकेले भारत में 1100 से उपर आर्य व डी ए वी विद्यालय है।
4. साथ ही यह आवश्यक है कि आर्य जन ईश्वर के स्वरूप को वेदों के अनुसार निराकार, अजन्मा, सर्वान्तरयामी व सर्वशक्तिमान माने— अर्थात् ईश्वर एक है जिसका न कोई आकार है नही जन्म होता है, वह कण कण में समाया हुआ है, वह हमारे अन्दर भी है, बात सिर्फ अन्दर झांकने की है।
5. पांचवा सतम्भ है—सत्य सर्वप्रिय है
ईश्वर सत्य है व सब काम सत्य और असत्य को विचार कर करने करने को कहा गया है। आर्य समाज के नियमों में सत्य पर बार बार जोर दिया गया है। मनुष्य से कहा गया है कि वह असत्य को छोड़ने व सत्य को ग्रहण करने में सदैव उद्यत रहे। जहां सत्य नहीं वहां धर्म नहीं
6. छठा स्तम्भ है— समाज में रहने के लिये प्रीतिपूर्वक व धर्मानुसार व्यवहार व सत्य और परोपकार का मार्ग। हर एक आर्य सज्जन से यह अपेक्षा की गई है कि वह संसार में रहता हुआ सूर्य की तरह परोपकार के मार्ग पर चले व उसका व्यवहार व केवल प्रीतिपूर्वक हो पर धर्मानुसार भी हो। सातवें नियम में बहुत सुन्दर बात की गई है सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार व यथायोग्य बर्तना चाहिये। इसी तरह पांचवा नियम कहता है सब कार्य धर्मानुसार अर्थात् सत्य व असत्य को विचार कर करने चाहिये।
जो आर्य समाज की कल्पना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने की थी उसमे अन्धविश्वास, पाखण्ड, झूठफरेब का कोई स्थान नहीं था।

वीर बालक हकीकत राय के बलिदान की कहानी

कृष्ण चन्द्र गर्ग

(सन्दर्भ ग्रंथ - 'धर्मवीर हकीकत राय' द्वारा डा. गोकुल चन्द्र नारंग)

मुगल सम्राट मुहम्मद शाह रंगीला के शासन काल में धर्मवीर हकीकत राय का जन्म पंजाब के प्रसिद्ध नगर स्यालकोट (अब पाकिस्तान में) में सन् 1719 में हुआ। पाँच वर्ष की आयु में हकीकत राय को विद्वान पण्डित जी के पास हिन्दी-संस्कृत पढ़ने के लिए भेज दिया गया। उसके पिता भागमल सरकारी कार्यालय में कलर्क थे। उस समय सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए फारसी भाषा का ज्ञान आवश्यक था। मुल्ला लोग मस्जिदों में ही फारसी पढ़ाया करते थे। दस वर्ष की आयु में हकीकत राय को भी मस्जिद में मुल्ला के पास फारसी पढ़ने के लिए भेजा गया।

मस्जिद में मुसलमान लड़के हिन्दू विद्यार्थियों से छेड़खानी करते रहते थे और उनके देवी देवताओं की निन्दा करके हिन्दू धर्म को नीचा दिखाते थे। हकीकत राय अत्यन्त मेधावी एवं तीक्ष्ण बुद्धि वाला था। वह आम तौर पर मुसलमान लड़कों को बहस में हरा देता था। अतः मुसलमान लड़के हकीकत राय से चिढ़ते थे तथा उसके विरुद्ध जहर उगलते रहते थे। एक दिन मुल्ला की अनुपस्थिति में उन्होंने हकीकत राय के विरुद्ध षड़यन्त्र रचा, उसे बहुत पीटा और जब मुल्ला आया उसके पास हकीकत के विरुद्ध आरोप लगाया कि उसने हजरत मुहम्मद साहब की बेटी फातमा को गाली दी है। यह सुनते ही मुल्ला आग बबूला हो गया और हकीकत को पकड़ कर नगर के शासक के पास ले गया। शासक ने नगर के मुसलमान



काजियों को बुलाया और उनसे हकीकत के अपराध के लिए फतवा (इस्लाम के अनुसार फैसला) मांगा। सब काजियों ने एक मत से निर्णय दिया कि हकीकत ने जो अपराध किया है उसका दण्ड मृत्यु है। परन्तु यदि वह मुसलमान बन जाए तो उसे क्षमा किया जा सकता है। यह खबर शहर में आग की भांति फैल गई।

हकीकत राय के पिता के साथ बहुत से प्रमुख हिन्दू इक्के होकर शहर के शासक के पास गये और कहा कि हकीकत बालक है, नादान है, इसलिए उसे क्षमा कर दिया जाये। परन्तु वहां न्याय कहाँ! अन्त में शहर के शासक ने मामला गम्भीर देखकर इसे लाहौर के बड़े शासक के पास भेज दिया। लाहौर में भी मुल्ला लोग इक्के होकर उसी बात पर अड़े रहे कि हकीकत मुसलमान बन जाए अन्यथा उसका कत्ल कर दिया जाये।

लाहौर के शासक ने हकीकत राय को मुसलमान बनने के लिए लालच भी दिए। उसके माता-पिता ने भी पुत्र की जान बचाने के लिए उसे मुसलमान बनने की सलाह दी। परन्तु पन्द्रह वर्ष के वीर बालक हकीकत राय ने मुसलमान बनना स्वीकार न किया।

सन् 1734 में बसन्त पंचमी के दिन हकीकत राय को लाहौर की कत्लगाह में ले जाया गया। सारे शहर में हाहाकार मच गया। हजारों नर-नारियों के जमघट के सामने जल्लाद ने एक बार फिर हकीकत राय को कहा कि वह इस्लाम स्वीकार करके अपनी जान बचा ले, पर हकीकत राय न माना। जल्लाद ने तलवार के एक ही वार से हकीकत राय का सर तन से अलग कर दिया। लाहौर के हिन्दुओं ने शहर से चार मील की दूरी पर शालीमार बाग के पास उसका अंतिम संस्कार कर दिया।

लाला लाजपत राय जी जिन्हें आर्य समाज ने महान नेता, दानवीर, कांतीकारी व महान स्वतन्त्रता सेनानी बना दिया



आर्यसमाज मेरे लिए माता के समान है और वैदिक धर्म मुझे पिता तुल्य प्यारा है। पि ये शब्द स्वतंत्रता के उस सिपाही और भारत माता के उस लाल के हैं जिन्हें लोग लाला लाजपत राय जी नाम से जानते हैं। आजादी के महानायकों में लाला लाजपत राय का नाम ही देशवासियों में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार कराता है। अपने देश धर्म तथा संस्कृति के लिए उनमें जो आर्य समाज ने पैदा किया, उसी के कारण वे स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर अपना जीवन दे सके। भारत को स्वाधीनता दिलाने में उनका त्याग, बलिदान तथा देशभक्ति अद्वितीय और अनुपम थी। उनके बहुविधि व्यक्तित्व में

साहित्य-लेखन एक महत्वपूर्ण आयाम है। एक साधारण से परिवार में लाला जी का जन्म 28 जनवरी 1865 को पंजाब के मोगा जिले के दुधिके गाँव में हुआ था। उनके पिता लाला श्री राधा किशन आजाद जी सरकारी स्कूल में उर्दू के शिक्षक व माता देवी गुलाब देवी धार्मिक महिला थीं। लाला राधा किशन जी के विषय में लाला जी स्वयं लिखते हैं की मेरे पिता पर इस्लाम का ऐसा रंग चढ़ा कि उन्होंने रोजे रखना शुरू कर दिया था। सौभाग्य से मुझे आर्यसमाज का साथ मिला जिसके कारण मेरा परिवार मुसलमान बनने से बच गया। लाला जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे। धन आदि की अनेक कठिनाइयों के पश्चात् भी उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। 1880 में कलकत्ता यूनिवर्सिटी व पंजाब यूनिवर्सिटी की प्रवेश परीक्षाएं पास करने के बाद उन्होंने लाहौर गवर्नमेंट कॉलेज में दाखिला ले लिया व कानून की शिक्षा प्राप्त की लेकिन घर की माली हालत ठीक न होने के कारण दो वर्ष तक लाहौर में बिताया गया समय लाला जी के जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण साबित हुआ और यहीं उनके भावी जीवन की रूप-रेखा निर्मित हो गयी! उन्होंने भारत के गौरवमय इतिहास का अध्ययन किया और महान भारतीयों के विषय में प महान भारतीयों के विषय में प के दौरान वह लाला हंसराज जी व पंडित गुरुदत्त जी जैसे कांतिकारियों के संपर्क में आये। ये तीनों अच्छे मित्र बन गए और 1882 में आर्य समाज के सदस्य बनें। जब 30 अक्टूबर, 1883 को जब अजमेर में ऋषि दयानन्द का देहान्त हो गया तो 9 नवम्बर, 1883 को लाहौर आर्यसमाज की ओर एक शोकसभा का आयोजन किया गया। इस सभा के अन्त में यह निश्चित हुआ कि स्वामी जी की स्मृति में एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना की जाये जिसमें वैदिक साहित्य, संस्कृति तथा हिन्दी की उच्च शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी और पाश्चात्य ज्ञान -विज्ञान में भी छात्रों को दक्षता प्राप्त कराई जाये। 1886 में जब इस शिक्षण की स्थापना हुई तो आर्यसमाज के अन्य नेताओं के साथ लाला लाजपतराय का भी इसके संचालन में महत्वपूर्ण योगदान रहा तथा वे कालान्तर में डी०ए०वी० कालेज, लाहौर के महान स्तम्भ बने। युवाओं को राष्ट्रीय भक्ति का सन्देश देने के लिए उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा शिवाजी, स्वामी दयानंद, मेजिनी, गैरीबाल्डी जैसे प्रसिद्ध लोगों की आत्मकथाएं अनुवादित व प्रकाशित कीं! उन्हें दानवीर कहना गलत न होगा क्योंकि उन्होने उस समय में हजारों की राशी भूकम्प और आकाल पीड़ितों को दान में दी। वे कांतिकारियों को कितने प्रिय थे इसका अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि भगत सिंह, राजगुश्र सुखदेव ने उन पर हुये जान लेवा प्रहार का बदला लेने के लिये फांसी पर चढ़ गये। ऐसा गौरव तो किसी और नेता को, यहां तक कि महात्मा गांधी को भी हासिल नहीं हुआ। 27 जनवरी को उन का जन्म दिन था। वैदिक थोटस उन्हें श्रधांजली देजा है। आर्य समाज व खास कर डी ऐ वी संस्थाओं से अनुरोध है कि उन के जन्म दिन को वैसे ही मनाये जैसे वे महात्मा हंसराज का जन्मदिवस या फिर स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाते हैं।

गाँधी जी का स्वच्छता संदेश

सीताराम गुप्ता



गाँधी जी के लिए स्वच्छता केवल बाह्य स्वच्छता नहीं थी अपितु उनके लिए स्वच्छता के कई आयाम थे। उनके लिए मात्र शारीरिक स्वच्छता ही नहीं अपितु मानसिक स्वच्छता व निर्मलता भी अनिवार्य थी। गाँधी जी के अनुसार यह स्वच्छता व निर्मलता व्यक्ति के जीवन के साथ-साथ सार्वजनिक जीवन में भी अनिवार्य थी। सामाजिक परिवेश की निर्मलता के अतिरिक्त गाँधी जी पर्यावरण की स्वच्छता के प्रति भी

अत्यंत सचेत थे। हम सब जानते हैं कि गाँधी जी बड़े उद्योगों के पक्ष में न होकर लघु व कुटीर उद्योगों के विकास के पक्ष में थे। उन्हें पता था कि बड़े उद्योगों से न केवल षोषण की प्रक्रिया तेज़ होगी अपितु प्राकृतिक परिवेश भी बुरी तरह से प्रभावित होगा।

गाँधी जी ने अपने सामुदायिक जीवन में कुटीर उद्योगों को बहुत महत्त्व दिया। उन्होंने प्रदूषणरहित हाथ के कार्यों को प्राथमिकता दी। इस प्रकार से हम देखते हैं कि गाँधी जी ने स्वच्छता व शुद्धता के हर बिंदु को स्पर्श किया और अपने स्वयं के उदाहरणों द्वारा लोगों को प्रेरित किया। गाँधी जी का स्वच्छता संदेश विषय पर चर्चा करने से पूर्व मैं अत्यंत संक्षेप में अपनी कुछ आदतों के विशेष में बात करना चाहूँगा। मैंने आज तक अपने जूते अन्य किसी से भी पॉलिश नहीं करवाए हैं। पहले मैं अपने जूते ही नहीं बच्चों के व पत्नी के जूते भी स्वयं ही पॉलिश करता था। मैं



अपने घर के सभी शौचालय आज भी स्वयं साफ करता हूँ। घर में ही नहीं बाहर भी जब भी किसी शौचालय का प्रयोग करता हूँ तो चाहे वो जैसा भी मिले मैं उसे पूरी तरह से साफ करके ही बाहर निकलता हूँ। और भी कई तरह की स्वच्छता का पालन करने का प्रयास करता हूँ। ये बात मैं किंचित गर्व से कह सकता हूँ कि स्वच्छता के मामले में मैं बहुत से लोगों से बहुत आगे हूँ। जब मैं कभी विचार करता हूँ कि मुझे स्वच्छता की प्रेरणा कहाँ से मिली तो एक ही नाम मेरे मन में उभरता है और वो है महात्मा गाँधी। जब भी मैंने गाँधी जी को अथवा गाँधी जी के विशेष में पढ़ा उसने मुझे गहरे तक प्रभावित किया। गाँधी जी हमेशा मेरे रोल मॉडल रहे हैं और आज भी हैं। उनके स्वच्छता के संदेश ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया है।

यदि हम सत्य और अहिंसा ही नहीं स्वच्छता शब्द का उच्चारण भी करते हैं तो गाँधी जी की छवि अनायास हमारे मन-मस्तिष्क पर अंकित हो जाती है। वास्तव में गाँधी जी स्वच्छता के पर्याय थे। चाहे कितना भी महत्त्वपूर्ण

कार्य उनके सामने रहा हो उन्होंने स्वच्छता के कार्य को हमेशा प्राथमिकता दी। वर्ष 2014 में देश में जिस स्वच्छता मिशन का प्रारंभ हुआ वो भी गाँधी जी के जन्म दिवस अर्थात् दो अक्टूबर को ही प्रारंभ किया गया। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि गाँधी जी और स्वच्छता कितने अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। प्रश्न उठता है कि क्या गाँधी जी ने स्वच्छता के लिए लोगों को बहुत प्रोत्साहित किया था? क्या किसी के प्रोत्साहित करने मात्र से हमारे अंदर अच्छी आदतों का विकास संभव है? प्रोत्साहन का प्रभाव होता है लेकिन एक सीमा तक ही। वास्तव में किसी भी क्षेत्र में गाँधी जी का कार्य करने का जो तरीका था वो अद्भुत था। गाँधी जी कभी उपदेश नहीं देते थे अपितु कार्य करने में विश्वास रखते थे। गाँधी जी ने स्वच्छता के विषय में भी बड़ी-बड़ी बातें नहीं कीं अपितु जहाँ भी गए स्वयं स्वच्छता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

गाँधी जी ने लोगों से स्वच्छ रहने के लिए कहा लेकिन स्वच्छता का प्रारंभ स्वयं से किया। वे जहाँ भी जाते गंदगी देखते ही झाड़ू और टोकरी उठाकर काम में लग जाते। बात कूड़े-करकट तक सीमित नहीं रही गाँधी जी ने मल-मूत्र तक साफ करके लोगों के सम्मुख स्वच्छता का महान आदर्श प्रस्तुत किया। गाँधी जी बड़ी-बड़ी बातें करने की बजाय स्वयं करने में विश्वास करते थे। एक बार किसी ने जब उनसे पूछा कि आप लोगों को क्या संदेश देना चाहेंगे तो गाँधी जी ने कहा था कि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। यदि उसमें कुछ अच्छा है तो उसे दोहराएँ। गाँधी जी का जीवन बहुआयामी रहा है। उन्होंने अनेक बड़े-बड़े कार्य किए लेकिन किसी छोटे से लगने वाले कार्य की भी कभी उपेक्षा नहीं की। स्वच्छता के संदर्भ में भी उनका जीवन उनका संदेश बना इसमें संदेह नहीं। यदि गाँधी जी के जीवन में स्वच्छता की बात करें तो उसका प्रारंभ प्रमुख रूप से दक्षिणी अफ्रीका से होता है। जब गाँधी जी दक्षिणी अफ्रीका में थे तो उन्होंने देखा कि वहाँ रहने वाले अंग्रेज वहाँ रहने वाले भारतीयों से बहुत नफरत करते थे जिसका प्रमुख कारण था भारतीयों की शोचनीय दशा। दक्षिणी अफ्रीका में बसने वाले अधिकांश भारतीय न केवल गंदी बस्तियों में रहते थे अपितु स्वच्छता के प्रति भी पूरी तरह से उदासीन थे। स्वच्छता के प्रति उनमें कोई जागरूकता नहीं थी।

गाँधी जी के लिए स्वच्छता के कई आयाम थे। उनके लिए व्यक्तिगत शारीरिक स्वच्छता ही नहीं सामुदायिक स्वच्छता भी महत्वपूर्ण थी। गाँधी जी की दृष्टि अत्यंत व्यापक थी। उन्हें पता था कि गंदे मोहौल में कोई एक साफ व्यक्ति भी स्वच्छ व नीरोग नहीं रह सकता। उन्होंने सामुदायिक जीवन में सुधार की शुरुआत वहीं दक्षिणी अफ्रीका से की। गाँधी जी ने वहाँ पर कई आश्रमों की स्थापना की जहाँ पर स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता था। वास्तव में उनके आश्रम स्वच्छता की मिसाल रहे हैं। दक्षिणी अफ्रीका में भी गाँधी जी न केवल मलिन बस्तियों में गए अपितु स्वयं सफाई करके लोगों को स्वच्छता की ओर आकर्षित किया। बाद में गाँधी जी हमेशा के लिए भारत लौट आए। यहाँ गाँधी जी का प्रमुख कार्य था देश की आज़ादी के लिए संघर्ष। गाँधी जी जब अधिवेषनों में भाग लेने जाते तो वहाँ की सफाई व्यवस्था को देखकर बहुत दुखी होते थे। लोगों के रहने के आसपास फैला कूड़ा-करकट ही नहीं मल-मूत्र देखकर वे बहुत परेशान हो जाते थे। अनेक स्थानों पर जब उन्होंने स्वयं सेवकों से सफाई करने के लिए कहा तो उन्होंने गाँधी जी से कहा कि ये उनका काम नहीं है। तब गाँधी जी स्वयं ही झाड़ू और बाल्टी लेकर सफाई के काम में लग जाते। उन्होंने मल-मूत्र तक साफ किया। स्वयं कार्य करके उन्होंने स्वयं सेवकों को गंदगी साफ

करने के लिए प्रेरित किया और इस तरह सफाई व्यवस्था में धीरे-धीरे सुधार होने लगा।

गाँधी जी जहाँ भी जाते सबसे पहले वहाँ के शौचालयों को देखने जाते। यदि कहीं कोई कमी मिलती तो अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य छोड़कर स्वयं सफाई में लग जाते। गाँधी जी का स्पष्ट मत था कि स्वच्छता के बिना स्वतंत्रता का कोई महत्त्व नहीं। वे स्वतंत्रता के साथ-साथ एक स्वच्छ राष्ट्र की कल्पना भी करते थे। स्वच्छता के लिए गाँधी जी ने न जाने कितने प्रयोग किए। उन्हें दूसरों की गंदगी साफ करने से भी परहेज नहीं था। गाँधी जी ने न जाने कितनी बार दूसरे लोगों की गंदगी और मल-मूत्र साफ किया लेकिन उनका जोर इस बात पर रहा कि हम अपनी सफाई खुद करना सीखें और करें। गाँधी जी ने सर पर मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करने के लिए कम प्रयास नहीं किए। वो ये भी मानते थे कि गंदगी साफ करना किसी एक वर्ग विशेष का कार्य नहीं है। हमें अपने अन्य कार्यों की तरह अपनी सफाई का कार्य भी स्वयं करना चाहिए। उन्होंने शौचालयों की तकनीक में सुधार का कार्य भी किया जिससे सफाई अपेक्षाकृत सरल हो सके। गाँधी जी कहते थे कि हमारे शौचालय हमारे रसोईघरों जैसे साफ-सुथरे और स्वच्छ होने चाहिए। ये गाँधी जी के प्रयासों का ही परिणाम है जो स्वच्छता के प्रति लोगों के विचारों में परिवर्तन आया और इस क्षेत्र में बहुत सुधार हुआ। लोगों में स्वयं साफ-सफाई करने के लिए जागरूकता उत्पन्न हुई।

जैसा कि पहले भी निवेदन किया जा चुका है गाँधी जी के लिए स्वच्छता केवल बाह्य स्वच्छता नहीं थी अपितु उनके लिए स्वच्छता के कई आयाम थे। उनके लिए मात्र शारीरिक स्वच्छता ही नहीं अपितु मानसिक स्वच्छता व निर्मलता भी अनिवार्य थी। गाँधी जी के अनुसार यह स्वच्छता व निर्मलता व्यक्ति के जीवन के साथ-साथ सार्वजनिक जीवन में भी अनिवार्य थी। इस क्षेत्र में हम कितना सफल हुए इस विषय पर हम यहाँ पर विस्तार से चर्चा नहीं करेंगे। सामाजिक परिवेश की निर्मलता के अतिरिक्त गाँधी जी पर्यावरण की स्वच्छता के प्रति भी अत्यंत सचेत थे। हम सब जानते हैं कि गाँधी जी बड़े उद्योगों के पक्ष में न होकर लघु व कुटीर उद्योगों के विकास के पक्ष में थे। उन्हें पता था कि बड़े उद्योगों से न केवल शोषण की प्रक्रिया तेज़ होगी अपितु प्राकृतिक परिवेश भी बुरी तरह से प्रभावित होगा। उनकी बातों को नज़रअंदाज़ करने का ही परिणाम है कि लघु व कुटीर उद्योग समाप्त होने से न केवल रोज़गार की स्थिति अत्यंत भयावह हो चुकी है अपितु पर्यावरण भी बुरी तरह से प्रदूषित हो चुका है। बड़े शहरों में तो साँस लेना भी मुश्किल होता जा रहा है।

गाँधी जी ने अपने सामुदायिक जीवन में कुटीर उद्योगों को बहुत महत्त्व दिया। उन्होंने प्रदूषणरहित हाथ के कार्यों को प्राथमिकता दी। इस प्रकार से हम देखते हैं कि गाँधी जी ने स्वच्छता व शुद्धता के हर बिंदु को स्पर्श किया और अपने स्वयं के उदाहरणों द्वारा लोगों को प्रेरित किया। लोगों ने गाँधी जी की बातों को स्वीकार किया इसका प्रमुख कारण यही है कि उन्होंने मात्र उपदेश नहीं दिया अपितु स्वयं करके दिखलाया। गाँधी जी ने शारीरिक और मानसिक स्वच्छता व निर्मलता के जिस स्तर को प्राप्त किया वह दुर्लभ है। आज यदि पर्याप्त राशि व्यय करने के बाद भी हम स्वच्छता के अपने मिशन में कामयाब नहीं हो पाते हैं तो इसके प्रमुख कारण उपदेशात्मक वृत्ति व भ्रष्टाचार ही हैं। यदि हम चाहते हैं कि स्वच्छता का कार्यक्रम सही अर्थों में सफल हो तो हमें आडंबर छोड़कर गाँधी जी की तरह स्वयं उदाहरण बनना होगा। इसी में निहित है गाँधी जी के स्वच्छता के संदेश की सफलता।

Working on Intuition

Bhartendu Sood

During his brief stay in India in the '70s, Steve Jobs had said that Indians worked more on intuition as compared to those in the West. I don't know whether that was a compliment or a barb. First we need to understand what intuition is and what its source is. To me intuition is inner voice or instinct which helps us to pre-form an opinion about the thing to happen. I think this inner divine sound is there in our deep inner centre which plays its role of giving its direction when we contemplate to do something important to us. So, it will not be wrong to say that our sub-conscious mind is the source of intuition. Next question is whether intuition can always give right direction. Not necessarily since it is influenced by our intellect/wisdom, knowledge of things, faith in one's inner voice, events and our constant thinking/meditation of that. Meditation is most important for right intuition since it clears the mind of distractions and teaches us how to recognize the subtle impulses within. Our intellect has a great role in it as it combines all-knowledge, faith and our sense of reasoning.

Who can have right intuition? I think the one who meditates, who has spiritual bent of mind and probes the things critically can have the right intuition. It is for this reason that there are people who have intuition about their own death even. The one who does not probe the idea and has herd mentality cannot have right intuition. I have personally met a 93 years old person who declared that on Dusshera day when the procession taking Rama would pass through his house, he'd say



goodbye to the near and dear ones on this planet and would join his god Rama. Things happened as he had declared. When he heard the sound of Band leading the procession he breathed his last. Sense of right intuition does not come in a day, it has to be developed. Many Jain sages pre-decide and pre-inform about their death date. The more faith one demonstrate in his intuition, the better the results will be. One should not consult others about one's intuitive message simply because his level of intellect can be different from yours. But, one can critically examine his intuitive message with his own reasoning before acting.

Intuition and faith are interlinked. But, while attempting to analyze Steve Job's statement, we first need to understand what 'faith' is in the context of intuition. Faith and blind faith are two different things though confused in India and because of that these are clubbed together. Faith is born out of reasoning and rests on the pillars of logic. Blind faith defies reasoning. For example sight of a black cat features an intuitive thinking in many countries but funniest part is that in a few countries it is a sign of positive outcome and in other of bad

outcome. Therefore, to me, this is a blind faith not backed up by any reasoning. Intuition born out of such blind faith has probability of wrong results. If faith is not blind, intuition can drive us to actions that most of the times will be rewarded with positive outcome. Thus, there is nothing wrong in working on intuition but it should spring from sound faith backed up by reasoning and study. In India blind faith has acquired more space than the reasoned faith with the result, acts performed on intuition are quite often not positive.

Should we act on intuition before taking any decision? Nothing wrong in it but this skill has to be developed with meditation and analytical thinking.. The one who makes it a habit may not be very successful but he saves himself from sinful acts. Mahatma Gandhi in his biography writes that once when he wanted to try non-vegetarian food, immediately the scene of hens being hatchet came before his eyes and he gave up the idea. Though a few suggest that one should act immediately on getting the intuitive message but I differ in this regard. I believe one should pause and give a thought with sound reasoning to get better results.

Steve Jobs' assessment about Indians appears to be right but what is required is that we in India analyze instinctive message with sound reasoning, before accepting it, only then our actions on intuition will get us good results.

पुस्तक---स्वर्ग के सोपान



नरेन्द्र कुमार आर्य अपनी सेवानिवृत्ति के अवसर पर एक अध्यात्मिक विषयों पर प्रकाश डालने वाली पुस्तक ले कर आये। नरेन्द्र कुमार जी समाज की विचारधारा से रंगे उच्च कोटी के विद्वान हैं।



लेखक नरेन्द्र कुमार आर्य एवं पत्नी श्रीमती कमलेश आर्य

उन्होंने पहले भी दो पुस्तकें

लिखी हैं—गायत्री मन्त्र की व्याख्या व सुखी जीवन के रहस्य। मुझे व मेरी पत्नी को इनकी दो पुस्तकें पढ़ने का अवसर मिला। हम दोनों ने इनकी लिखने की शैली को आर्य समाज गुरुकुलों से पढ़े लेखकों से कही अच्छा व

सरल पाया। यह वेदों की बातों को आम व्यक्ति तक ले जाने में कहीं अधिक सफल नजर आये। इसलिये बधाई के पात्र हैं। मैं आर्य समाज के प्रबन्धन से जुड़े व्यक्तियों को फिर एक सुझाव दूंगा कि आर्य समाज के विद्वान केवल गुरुकुल से निकले व्यक्ति ही नहीं होते, जैसा की वे मानकर चलते हैं, नरेन्द्र जी जैसे व्यक्तियों को अवसर दें जो कि केवल स्टेज पर ही आर्य समाजी नहीं बल्कि जीवन में भी आर्य समाजी हैं। व्यक्ति के बोलने की कला न देखकर उसके जीवन का त्याग देखें। इस में ही आर्य समाज का भला है। नरेन्द्र कुमार आर्य जी को मेरी व मेरी पत्नी की हार्दिक बधाई व शुभ कामनायें।

प्यार से बहू भी अपनी पुत्री बन जाती है

ऐम ऐस टंडन

मेरे एक मित्र नवीन अपनी पत्नी, इकलोते पुत्र जय और उसकी पत्नि शैली के साथ नोएडा में बहुत सुख का जीवन जी रहे थे। बदकिस्मती से जय की मृत्यु एक दुर्घटना में हो गई। बृधावस्था में अब उनकी बहू शैली ही उनके जीवन का सहारा थी।

शैली प्यार और पूरी तन्मयता के साथ बूढ़े सास ससुर की सेवा करती थी परिणाम स्वरूप दोनों ही बेटे को खोने के दुख से शीघ्र ही काफी हद तक उभर कर सामान्य जीवन में वापिस आ गये। इस तरह तीन साल बीत गये। शैली अभी बिलकुल जवान थी। दोनों अपनी बहू की ऐसी हालत देख कर दुखी होते। उनको ऐसा लगता जैसे उनकी अपनी बेटी अभी कुंवारी है। दोनों ने शैली को दूसरी शादी के लिये प्रेरित करना शुरू कर दिया और जब बात ऐसे न बनी तो दबाव डालना प्रारम्भ कर दिया। आखिर शैली ने उनकी बात मान ली और एक अच्छा वर देख कर बहुत सादे ढंग से उसकी दूसरी शादी कर दी



अब शैली अपने ससुराल में थी। शादी के बाद, एक दिन नवीन अपने बैंक पास बुक में एंट्री करवाने गये तो उनकी हैरानगी की कोई सीमा नहीं रही जब उन्होंने देखा उनके खाते में 10 लाख रुपये आये हुये थे। मैनेजर से पूछा तो पता लगा कि यह पैसा शैली के खाते से उसकी शादी के दो दिन पहले आये थे। उसी वक्त उन्होंने शैली से फोन पर पूछा। शैली ने जो कहा वह कुछ इस तरह था———” बाबू जी, जय की मृत्यु के पश्चात मैने यह सोच लिया था कि मैं एक

पुत्री की तरह आप दोनों की जीवन भर सेवा करूंगी। परन्तु जब आपके आग्रह को मैं टाल न सकी तो जो 10 लाख की रकम जय की मृत्यु के पश्चात मुझे इंशोरेंस कलेम के रूप में मुझे मिली थी मैने अपने होने वाले पति से बात कर, आप के खाते में डाल दिये ताकी इस बृधावस्था में आपको किसी तरह कि आर्थिक मुश्किल का सामना न करना पड़े। जहां तक मेरा सवाल है, आपने अपनी सूझबूझ से मेरा जीवन फिर से फूलों की सेज बना दिया है।” नवीन और उनकी पत्नि की आखें में अश्रूधारा वह रही थी पर यह उनके प्यार का ही जादू था। सचमुच प्यार में बहुत शक्ति है आपका प्यार आपकी बहू को भी अपनी पुत्री बना सकता है

मंजर भोपाली ने कहा है——” कभी बेटियों के लिये भी हाथ उठाओ मंजरं। अल्लाह से सिर्फ बेटा नहीं मांगा करते।”

Forever indebted to merciful God

Vandana Arora

When asked if my cup is half full or half empty, I say I am thankful to have a cup. Each day, each moment is worth thanksgiving. During a recent discussion with my son who is on the verge of entering teenage years, I made him realize how fortunate he is. Like any other adolescent, he craved for gadgets and goodies that some of his friends flaunt and which I find frivolous. I made him enlist the things that he owns but his friends don't. Preaching imparts lessons to the preacher too. Along with my son, I too basked in the dawn of realization that God has been immensely kind to me. I sent my grudges to a sabbatical as I wanted to drench myself in the showers of His overwhelming benevolence. John Milton appropriately quotes in *Paradise Lost*, "The mind is its own place, and in itself can make a heaven of hell, a hell of heaven." Being thankful for what we have saves us the disgrace of hell. We duck ourselves into the unfathomable oceans of misery by resorting to grumbling and cribbing over little pretexts; whereas, we have the ability to rejoice in the bliss by admiring and cherishing whatever we have.

Last week's dusk witnessed me returning from a doctor's clinic for my daughter's check-up. At one of the traffic signals, I saw a middle-aged woman pushing herself into an alarmingly overcrowded bus. The swelling darkness left that woman with no choice but to embark on the bus stuffed with men. I could read her helplessness and hesitation and then compulsory decision to enter a vehicle where she was vulnerable enough but this compromise would make her reach home (or house) in time. I feel grateful for a dignified vehicle that I use. It alarms me to see people sleeping on footpaths enduring and sometimes surrendering to the biting chill of winters in Delhi.

I feel thankful to the almighty for a graceful shelter. It stupefies me to see people begging for food. I feel grateful for the three course meal as well as choicest delicacies. It's spine-chilling to see people partially clad in winters. I thank God for a variety of seasonal attires. It's shocking to see people with disabilities. I feel humbled to be able. Compassion flows out when inequality disintegrates society into fragments. While writing this I arrive into a garden of awareness. I am able to contemplate on a plethora of things that urge me to express gratitude.

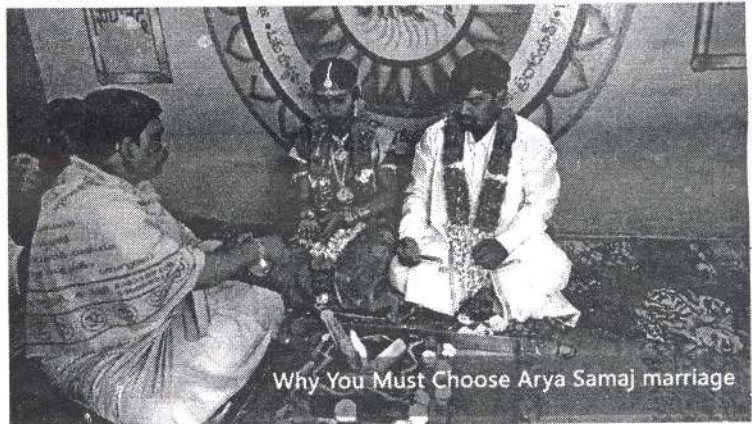
The purpose of our life is met if along with appreciating our blessings, we share the same with our fellow human beings. The highest appreciation is not to utter words but to live by them. I think we need not wait for some thanksgiving occasion rather we must be thankful for each breath we take. Each new dawn heralds hope for us. We must cultivate the habit of being grateful which will immerse us into the richness of our blessings. I wish to sum up with a few words of gratitude that I learnt in my school: "Thank you God for the world so sweet/Thank you for the food we eat/Thank you for the birds that sing/Thank you God for everything."

आर्य समाज का भविष्य कोई आशाजनक नहीं

भारतेन्दु सूद

चाहे प्रीतीभोज कर लें, दूर दूर से विद्वानों को बुलाकर कथा या भाषण करवा लें या फिर सैंकड़ों कुण्डिय यज्ञ करवा लें, जहां तक जनमानस तक पहुंच या फिर जनता के आर्य समाज के प्रति झुकाव का प्रश्न है, हाल बहुत शौचनिय है। अभी चण्डीगढ़ के एक आर्य समाज के वार्षिक उत्सव में गया था। प्रबन्धक महोदय ने डी ए वी विद्यालय के छात्रों के वक्तव्य भी रखे थे। दो छात्रों ने हिस्सा लिया। एक ने विषय चुना था पर्यावरण और दूसरी ने चुना था नैतिक मूल्य। मैं दुखी भी था और हैरान भी। कारण—आप आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर बोल रहे हैं। क्या ऐसे मौके पर उनके आचार्य जो कि गुरुकुल से ही हैं, महर्षि दयानन्द या आर्य समाज पर 5 मिनट का भाषण तैयार नहीं करवा सकते थे। जाहिर था जो भाषण उन्होंने बोले वे उन्होंने किसी और मौके पर भी बोले थे। यही अवसर आप शहर के किसी गवर्नमेंट स्कूल के विद्यार्थी को दें मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि वह महर्षि दयानन्द या आर्य समाज पर ही अपना भाषण बना कर लायेगा।

प्रबन्धकों का कोई कसूर नहीं। वे पूरी कोशिश करते हैं। अच्छे से अच्छे विद्वान बुलाते हैं, अच्छे से अच्छा प्रीतीभोज का आयोजन करते हैं यदि हम में ही आर्य समाज के प्रति कोई तड़प नहीं रही है तो वे भी क्या कर सकते हैं। आज जो थोड़े बहुत आर्य समाज से जुड़े हैं, सब को आर्य समाज से अपेक्षा ही है। इन्ही आचार्य महोदय को जहां दक्षिणा मिलनी हो वहां महर्षि दयानन्द या आर्य समाज पर अच्छा भाषण तैयार करके आर्येंगे।



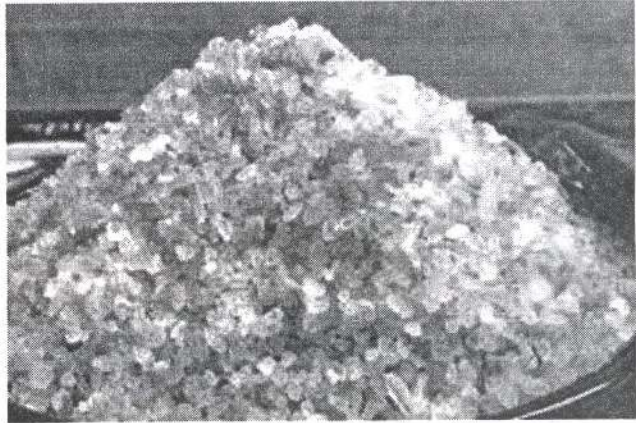
अच्छा होगा जो थोड़े बहुत आर्य समाजी है वे बैठ कर इस बात पर चिन्तन करें कि क्यों हमारे अपने ही बच्चों का आर्य समाज की तरफ झुकाव नहीं है। स्पष्ट है कि जो हम कर रहे हैं वह विधी बिल्कुल असफल हो चुकी है क्योंकि आज के समय में यह प्रासंगिक नहीं है। भूतकाल से प्रेरणा तो ली जा सकती है परन्तु हर समय उसके गीत नहीं गाये जा सकते। समाज वही आगे बढ़ता है जिस के पास वर्तमान के समीकरण में आगे के लिये प्रोग्राम होता है। जो हम कर रहे हैं। उससे केवल कुछ वक्ताओं और भजनोपदेशकों का भला हो रहा है। शहर के 50-60 आर्य समाजियों को, जिन में 80 प्रतिशत विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी ही होते हैं, किसी भी तरह इकठा कर के एक ही बात बार बार कितनी बार सुनाओगे? यदि कोई यह कहता है कि सौ साल पहले से समाज ऐसे ही चल रहा है तो मेरा उससे यही प्रश्न है कि जिस तरह तख्ती ले जाकर आप ने स्कूल में शिक्षा ली क्या आप अपने बच्चे को वैसी ही पढ़ा रहे हैं। यदि बच्चों के लिये आप ने सब कुछ नवीन व प्रासंगिक अपनाया तो आर्य समाज के लिये क्यों नहीं?

कौन सा नमक प्रयोग किया जाये

नमक मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं। एक होता है समुद्री नमक दूसरा होता है सेंधा नमक (rock salt) सेंधा नमक बनता नहीं है पहले से ही बना बनाया है। पूरे उत्तर भारतीय उपमहाद्वीप में खनिज पत्थर के नमक को 'सेंधा नमक' या 'सैन्धव नमक', लाहोरी नमक आदि-आदि नाम से जाना जाता है। जिसका मतलब है 'सिन्धु या सिन्धु के इलाके से आया हुआ'। वहाँ नमक के बड़े-बड़े पहाड़ हैं सुरंगें हैं। वहाँ से ये नमक आता है। मोटे मोटे टुकड़ों में होता है आजकल पिसा हुआ भी आने लगा है। यह हृदय के लिये उत्तम, दीपन और पाचन में मदद रूप, त्रिदोष शामक, शीतवीर्य अर्थात् ठंडी तासीर वाला, पचने में हल्का है। इससे पाचक रस बढ़ते हैं।

सेंधा नमक के फायदे

सेंधा नमक के उपयोग से रक्तचाप और बहुत सी गंभीर बीमारियों पर नियन्त्रण रहता है क्योंकि ये अम्लीय नहीं ये क्षारीय है (Alkaline)। क्षारीय चीज जब अम्ल में मिलती है तो वो न्यूट्रल हो जाता है और रक्त-अम्लता खत्म होते ही शरीर के 48 रोग ठीक हो जाते हैं। ये नमक शरीर में पूरी तरह से घुलनशील है। सेंधा नमक शरीर में 97 पोषक तत्वों की कमी को पूरा करता है! इन पोषक तत्वों की कमी ना पूरी होने के कारण ही लकवे



(paralysis) का अटैक आने का सबसे बड़ा जोखिम होता है। सेंधा नमक वात, पित्त और कफ को दूर करता है। यह पाचन में सहायक होता है और साथ ही इसमें पोटेशियम और मैग्नीशियम पाया जाता है जो हृदय के लिए लाभकारी होता है। यही नहीं आयुर्वेदिक औषधियों में जैसे लवण भास्कर, पाचन चूर्ण आदि में भी प्रयोग किया जाता है।

समुद्री नमक के नुकसान

समुद्री नमक आयुर्वेद के अनुसार बहुत खतरनाक है! क्योंकि कम्पनियाँ इसमें अतिरिक्त आयोडीन डाल रही हैं। अब आयोडीन भी दो तरह का होता है एक तो भगवान का बनाया हुआ जो पहले से नमक में होता है। दूसरा होता है industrial iodine ये बहुत ही खतरनाक है। तो समुद्री नमक जो पहले से ही खतरनाक है उसमें कम्पनियाँ अतिरिक्त industrial iodine डालकर पूरे देश को बेच रही हैं। जिससे बहुत सी गंभीर बीमारियाँ हम लोगों को हो रही हैं। आमतौर से उपयोग में लाये जाने वाला समुद्री नमक उच्च रक्तचाप (high BP) डाइबिटीज, आदि गंभीर बीमारियों का भी कारण बनता है। इसका एक कारण ये है कि ये नमक अम्लीय होता है। जिससे रक्त-अम्लता बढ़ती है। रक्त-अम्लता पथरी का भी कारण बनता है। ये नमक नपुंसकता और लकवा का बहुत बड़ा कारण है। समुद्री नमक से सिर्फ शरीर को 4 पोषक तत्व मिलते हैं! और बीमारियाँ जरूर साथ में मिल

जाती हैं! रिफाइण्ड नमक में 98 प्रतिशत सोडियम क्लोराइड ही है शरीर इसे विजातीय पदार्थ के रूप में रखता है। यह शरीर में घुलता नहीं है। इस नमक में आयोडीन को बनाये रखने के लिए Tricalcium Phosphate, Magnesium Carbonate, Sodium Aluminium Silicate जैसे रसायन मिलाये जाते हैं जो सीमेंट बनाने में भी इस्तेमाल होते हैं। विज्ञान के अनुसार यह रसायन शरीर में रक्त वाहिनियों को कड़ा बनाते हैं, जिससे ब्लॉक्स बनने की संभावना बढ़ती है। और ऑक्सीजन जाने में परेशानी होती है। जोड़ों का दर्द और गठिया, प्रोस्टेट आदि होती है। आयोडीन नमक से पानी की जरूरत ज्यादा होती है। 1 ग्राम नमक अपने से 23 गुना अधिक पानी खींचता है। यह पानी कोशिकाओं के पानी को कम करता है। इसी कारण हमें प्यास ज्यादा लगती है। हजारों साल पुरानी आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में भी भोजन में सेंधा नमक के ही इस्तेमाल की सलाह दी गई है। भोजन में नमक व मसाले का प्रयोग भारत, नेपाल, चीन, बंगलादेश और पाकिस्तान में अधिक होता है। आजकल बाजार में ज्यादातर समुद्री जल से तैयार नमक ही मिलता है। जबकि 1960 के दशक में देश में लाहौरी नमक मिलता था। यहाँ तक कि राशन की दुकानों पर भी इसी नमक का वितरण किया जाता था। स्वाद के साथ-साथ स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी होता था। समुद्री नमक के बजाय सेंधा नमक का प्रयोग होना चाहिए।

पुस्तक

(English Book of short stories---Our Musings)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम Our Musings है। इस पुस्तक की कीमत 150 रुपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रु भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही हैं जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये हैं। भेजने का खर्चा हमारा होगा।



कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक इंगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है

नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है

कृपया निम्न address पर सम्पर्क करें

भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर— 45-ए चण्डीगढ़.160047

0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

Success Mantra

Andrew Carnegie, the Scottish American industrialist and philanthropist, once observed, "There are two types of people who never achieve much in their life time: The person who won't do what he is told and the person who does no more than he is told." These words by one of the world's most successful 19th century businessmen need some attention, particularly for those among us, falling into the above two mentioned categories of people. Helen Keller, the American author, political activist and lecturer who was the first deaf-blind person to earn a Bachelor of Arts degree reached this distinguished status only by following the creed of committing to much in all that she undertook in her physically-challenged life. As she put it, "I long to accomplish a great and noble task, but it is my chief duty to accomplish humble tasks as though they were great and noble. The world is moved along, not only by the mighty shoves of its heroes, but also by the aggregate of the tiny pushes of each honest worker."

Going by these thoughts, belonging to the elite group of achievers is not a daunting task. All it takes is committing to do much in all that there is to be done and then sticking to that commitment with a tenacious will and determination, as did Helen Keller. An anonymous quote reiterates this philosophy: Bite off more than you can chew, then chew it. Plan more than you can do, then do it. Point your arrow at a star, take your aim, and there you are. Arrange more time than you can spare, then spare it. Take no more than you can bear, then bear it. Plan your castle in the air, then build a ship to take you there!

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins "VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

विश्वाम अनाहुतिम्

इसका अर्थ है कि हमारी भावना अयज्ञीय न हो अर्थात् हम कृतघन न बनें खास कर उस परमेश्वर के प्रति जो हमें प्राण देता है, जीवन के सब साधन देकर पालता है और रक्षा करता है। उसका स्मरण करना न भूलें क्योंकि जो भी इस सृष्टि में दिखाई दे रहा है वह उसी की देने है। इसी तरह हम अपने देवों के प्रति भी कृतज्ञ रहें। कोन है वे देव? दन देवों में सब से उपर माता पिता का स्थान है। क्या उस मां के उपकार को भूलाया जा सकता है, जिसने हमें 9 माह तक अपनी कोख में रखा और जन्म देते ही भरपूर प्यार दूलार दिया, अपने सुख का त्याग देकर हमें पाला।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

स्वर्ग नरक

विनोद स्वरूप

जब किसी प्राणी की मृत्यु होती है, तो सभी कहते हैं अभुक्त व्यक्ति स्वर्ग सिधार गया। 'नरक सिधार' गया ऐसा कोई नहीं कहता। जब व्यक्ति अपने निवास से घर से किसी अन्य स्थान को प्रस्थान करता है तो उसके पदचिन्ह होते हैं। जिनसे सभी को ज्ञात हो जाता है कि व्यक्ति ने इस मार्ग से प्रस्थान किया है किन्तु जब प्राणी प्राणत्याग कर जाता है तो उसके कोई पदचिन्ह नहीं होते। किसी को मालूम नहीं पड़ता कि प्राणी ने किस मार्ग से प्रस्थान किया। जहाँ प्राणी जाता है वहाँ से उसका न कोई पत्र आता है, न टैलीग्राम, न ही दूरभाष से सम्पर्क हो पाता है। उसका कोई मैसेज, व्हाट्सऐप, ट्वीट अथवा मौखिक सन्देश भी नहीं आता। जब हमारे पास प्राणी के वास की कोई सूचना ही नहीं होती कि प्राणी कहाँ पर है, फिर हम कैसे कह सकते हैं कि प्राणी स्वर्ग में है ? अर्थात् स्वर्ग में वास कर रहा है।

जब हम किसी ऐसे स्थान पर हों जहाँ भीड़ बहुत हो, लोग अधिक हो और स्थान कम हो, आगे-पीछे, दायें-बायें घूमना फिरना भी कठिन हो, धक्के लग रहे हों और खड़े होने में भी असुविधा हो, घोर इतना हो कि किसी से बात करना भी दूभर हो तो समझो नरक में हैं। अनेक बार मनुष्य ऐसे स्थान पर पहुँच जाता है जहाँ दुर्गन्ध का राज्य हो, मक्खी-मच्छर भिन भिना रहे हों, सांस लेना भी कठिन हो, दम घुटता हो। जहाँ से शीघ्र अति शीघ्र निकल जाने का मन करे तो अनायास ही हमारे मुख से शब्द निकलते हैं- 'कहाँ नरक में आकर फंस गये'।

सच तो यह है कि स्वर्ग और नरक इसी संसार में। यदि मनुष्य शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ है, आर्थिक रूप से सुदृढ़ है किसी के आगे हाथ पसारने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। पत्नी मधुर भाषिणी और परिवार के सदस्यों के साथ तालमेल बिठाने वाली हो, सन्तान आज्ञाकारी है। गृहस्थ में सुख, शान्ति, श्रद्धा और प्रेम का साम्राज्य हैं। व्यक्ति चिन्तामुक्त और तनाव से कोषों दूर है। घर में सभी उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। अस्वस्थ हो जाने पर उचित उपचार और पथ्य उपलब्ध हो। सेवा सुश्रुशा में कोई कमी नहीं है तो जान लो कि वह व्यक्ति पूर्ण रूप से स्वर्ग का सुख भोग रहा है। इसके विपरीत जो मनुष्य निरन्तर पतन की ओर जा रहा है। सुखी जीवन के लिए अपेक्षित साधनों का अभाव है। समय पर भोजन अथवा औषधि उपलब्ध नहीं होती। पत्नी-पुत्र अपना दायित्व ठीक से नहीं निभाते, सर्वदा उपेक्षा का भाव रहता है। वृद्धावस्था में दुर्गति को प्राप्त होता है। घर में किसी के पास बात तक करने का समय नहीं होता, अकेला पड़ा पड़ा चिन्तामग्न रहता है। घर में नित्य प्रति कलह क्लेश, असंतोश और अपमानित डेरा जमाए बैठी है। मनुष्य को असहाय होकर जीना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति निश्चित रूप से नरक में वास कर रहा है। वास्तव में 'स्वर्ग' या 'नरक' किसी स्थान विशेष का नाम नहीं है। सुखी जीवन 'स्वर्ग' और दुःखी जीवन ही 'नरक' है।



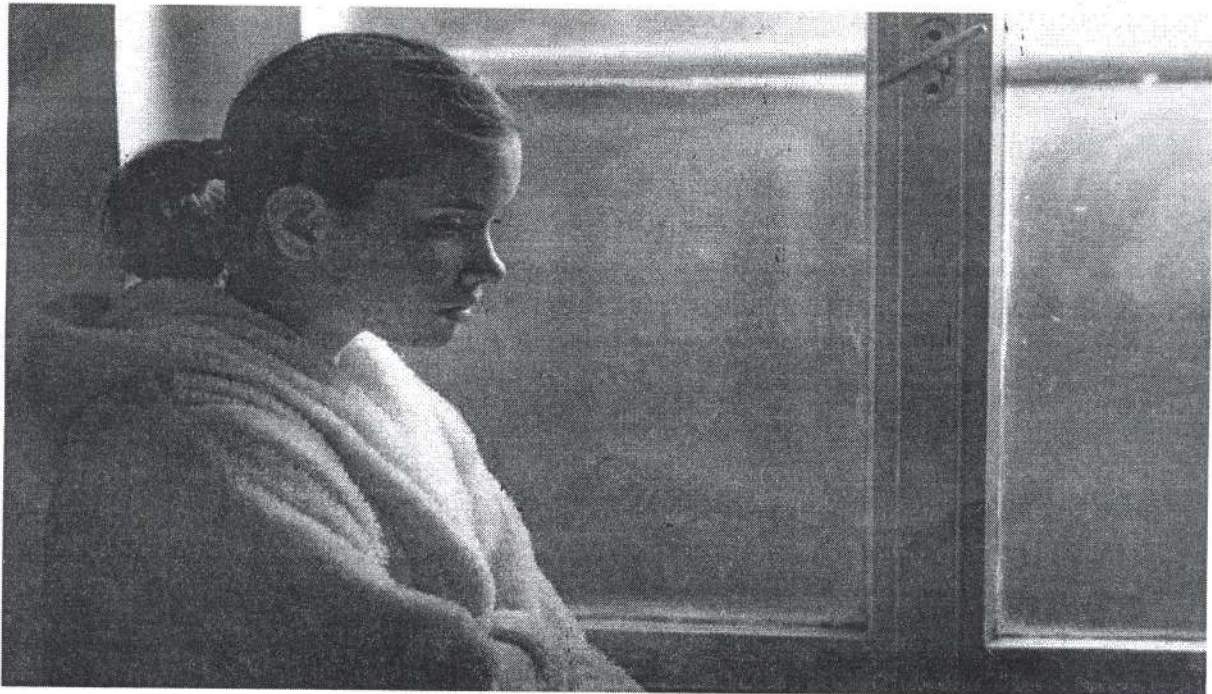
Life without stress is just not possible, balance is essential

Bhartendu Sood

Last month two trifles in my daily life helped me to conclude that instead of getting overwhelmed, it is much better to find out a middle path. This middle path is nothing but to get angry to the extent that it motivates you to do something and not so hugely that it breaks you down.

I was in a queue at the petrol pump outlet. Suddenly a young brat came and put his vehicle ahead of me. I politely asked him to be in queue. His rude reaction was, "I was already in queue if you couldn't notice it is not my fault." Shocked at his way of replying, I said, "The least you can do is to show respect to your elders." He retorted, "Toon mere chacha lagdan haien ke main respectfully bolan—Are you my uncle who deserves to be addressed respectfully"

In a second incident—I was watching a movie. Though a comedy, but instead of enjoying moments of humor it was anger that was brewing inside me. Reason, the man beside me was time and again attending to his cell phone calls. People around me seemed irritated, but no one said anything. After sometime the man had taken note of people's irritation and he stood to leave. In a moment of polite assertiveness, I said, "Excuse me, but the next time you come to the movies, would you consider turning off your cell phone?" He glared at me as if I had tossed a verbal hand grenade at him. Murmured a few words of anger, yelled a profanity and quickly walked away.



This goes to show that while living our lives, we can't have everything to our liking and to get angry and stressful by the happenings which are to our dislike is not in our overall interest. Balance is essential. It may sound rather clichéd, but coping well with stress comes down to one thing: your attitude. I have met scores of people who, on the surface, have enviable lives. . It's not that they don't have stress. They do but they just don't hold on to it. By cultivating a winning attitude, they have learned to adapt. They acknowledge stress, work to resolve it, and then move on. I learnt it from my wife's conduct with the domestic help who is good at her work and very reliable but does not turn up on a many days in a month which angers me but not my wife. My wife's defense of her was——'God gave us enough money to hire a domestic help. If we had not, then I would have been working self. If she does not come on 4-5 days in a month I have learnt to accept it as it gives me an opportunity to do the things self and you may not be knowing that it boosts my confidence no end as I get the feeling that I am capable enough to do the chores self without being dependent upon others'

. Let us start seeing the bigger picture of life in context of cycles of up and down and the people that make up our lives. If there are bad people, there are good also and they outscore the bad. It is quite possible that our unpleasant experiences are leaving us angry and stressed but then we should not miss the glorious big picture of pleasant experiences.

What I have learnt that you may be getting overwhelmed by the injustice happening around the world but the best way is to find the perfect middle path ground between fighting injustice and not letting it destroy your hope and faith in humanity. Your anger should be enough to motivate you to do something but not so huge as to break you down

शिमला का कामधेनु जल

SHARDA

गैस एसिडिटी व पेट के विकारों के लिए
एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 0172-2662870, 9217970381

Marketing Office : H. No. 231, Sector 23A, Gurgaon-122001

सांध्य बेला में सहारा

क्षमा रामा

विचार बुरा नहीं, उनके लिये जो जीवन में अकेले व बेसहारा हो जाते हैं।

त्रिशुल, केरल के बृद्धाश्रम में सड़सठ साल के कोचनियां मेनन रहते हैं। वहीं छियासठ साल की पी वी लक्ष्मी भी रहती है। दोनों एक दूसरे को अरसे से जानते हैं। मेनन लक्ष्मी के पति के मित्र थे। बहुत साल पहले लक्ष्मी के पति ने मरने से पहले मेनन को उनकी पत्नी की देखभाल करने के लिये कहा था। बहुत वर्ष एक दूसरे से दूर अलग अलग रहने के बाद वे बृद्धाश्रम में संयोगवश मिले। मेनन को कुछ समय बाद लकवा मार गया। लक्ष्मी मेनन की देखभाल करने की इच्छुक थी। मेनन भी लक्ष्मी को पसन्द करते थे, लेकिन मन की बात कभी नहीं कह सके। एक दिन लक्ष्मी ने मेनन से कहा कि उसे पता नहीं अब कितना जीवन बचा है, क्योंकि दोनों की उमर हो गई है। मगर जो भी जीवन बचा है वे दोनों साथ क्यों न बिता लें व दोनों ने शादी करने का फैसला कर लिया।

पठकों में कुछ को यह उनका निर्णय ठीक लगेगा और कुछ विरोद्ध भी कर सकते हैं। परन्तु मेरी राय में बेसहारा से सहारा होना कहीं अच्छा है, इस से अच्छी बात और क्या हो सकती है कि उनके एक कदम ने दो प्राणियों को सहारा दे दिया। कहां वे समाज में दूसरों से सहारा ढूंढते थे और कहां आज वे इस हालत में आ गये कि चाहें तो समाज में दूसरों का सहारा बन सकते हैं। हम देखते हैं कि जिन बजुर्गों के जीवन साथी छोड़ कर चले जाते हैं उन में से कुछ अपने आप को सम्भाल नहीं पाते और शारीरिक रोगों के साथ मानसिक रोगों का शिकार भी हो जाते हैं। शारीरिक रोग तो बुढ़ापे में आते ही हैं पर साथ में मानसिक रोग हो जाये तो समाज में परिवार में रहना मुश्किल हो जाता है।



ऐसे में अगर कोई जीवन साथी मिल जाये तो गलत भी क्या है? समाज व बच्चों का कर्तव्य हो जाता है कि इसे सहर्ष स्वीकार करें। अहमदावाद में ऐसे बजुर्गों के लिये जीवन साथी ढूंढने का काम एक संगठन कर रहा है। इसका नाम है—बिना मूल्य अमूल्य सेवा। अगर शादी न करें तो भी लिव इन अर्थात् साथ रहने में कोई बुराई नहीं। कुछ जगह तो बच्चे ही इसे प्रोत्साहित कर रहे हैं कारण बच्चे जनरेशन गैप के कारण कितना कुछ भी कर नें, जीवन साथी की कमी को पूरा नहीं कर सकते।।

टाज के बदलते समय में जब बजुर्गों के पास आर्थिक सुविधायें सब हैं, लेकिन सुनने वाला या फिर साथ देने वाला कोई नहीं, कारण आज का युवक युवती घर के लिये बहुत कम समय दे पा रहे हैं, ऐसे में यह विचार बुरा नहीं व व्यवहारिक लगता है।

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय - 1781, फेज 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059

शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नजदीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली

आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Narinder Singh Celebrated His Son's Birthday With Ashram Children



धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

A/c No. : 32434144307

Bank : SBI

IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G



स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निर्माण के 63 वर्ष



स्वर्गीय
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwalior-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फार्मासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047
0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया



Mohan Lal Gupta



Smt. Sudarshan Kalra



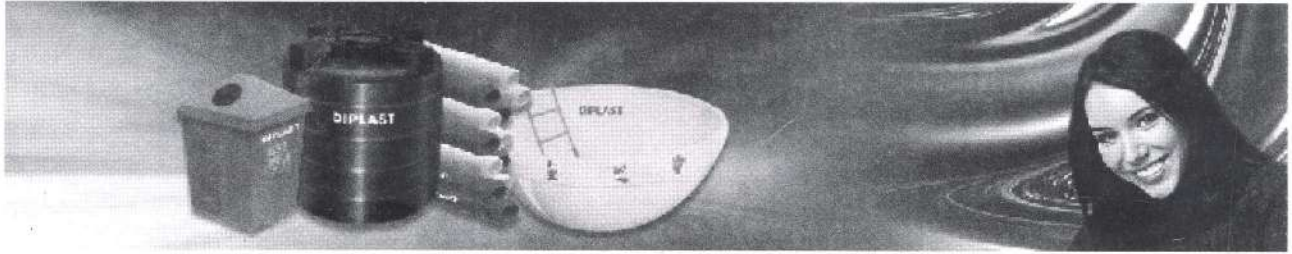
Sudarshan Kapoor



Suresh Mohan Sood



Smt. Vinod Ahuja



मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service



DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश,
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये
शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते हैं।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870